पाठ 6

DJQRF9

महाजनपद की ओर

आप जानते हैं कि आपका जनपद (जिला) कई तहसीलों से मिलकर बना है। कई जनपदों से मिलकर आपका प्रदेश बना है। इसी प्रकार प्राचीन काल में छोटे-छोटे जनपद मिलकर महाजनपद बन गए।

जन से जनपद एवं महाजनपद

जन- वैदिक काल में जन एक राजनैतिक इकाई थी।

लगभग 600ई0पू0 में महाजनपदों का विकास हुआ। इस समय वैदिक काल के जन का स्वरूप बदल गया और ये जनपद से महाजनपद बन गए।

ये कैसे बने ?

ीकुछ जनों (समूह) ने विकास किया, फलस्वरुप महाजनपद का स्वरूप प्राप्त कर लिया।
ीकुछ जनपदों के क्षेत्र बड़े थे। साथ ही दूसरे जनपदों की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली भी थे। यही जनपद महाजनपद कहलाये। 600ई0पू0 में 16 महाजनपद थे। इन महाजनपदों में से चौदह में राजतन्त्र तथा दो में गणतंत्र था।

इनके अतिरिक्त कुछ गणराज्य और भी थे जिनका प्रशासन भी गणतन्त्रीय था जैसे- कपिलवस्तु के शाक्य, वैशाली के लिच्छवि, पावा के मल्ल आदि।

राजतन्त्र में शासन का प्रधान वंशानुगत राजा होता था।

प्राचीन कालीन गणतंत्र में शासन की शक्ति सम्पूर्ण जनता के हाथों में न होकर किसी कुल अथवा गण विशेष के प्रमुख व्यक्तियों के हाथों में होती थी।

महाजनपद से साम्राज्य तक

16 महाजनपदों में से निम्नांकित 4 प्रमुख महाजनपद -

1. मगध (गया, मंुगेर)
2. कोशल (फैजाबाद)
3. वत्स (इलाहाबाद)
4. अवन्ति (मालवा)

प्रशासन, समाज और लोगों के जीवन में बदलाव

महाजनपद काल में राजा की शक्ति बढ़ गई थी। अब वह एक अतिविशिष्ट व्यक्ति बन गया था और वह समाज का रक्षक था। उसका मुख्य कर्तव्य दुश्मनों से प्रजा की रक्षा व राज्य में शांति व्यवस्था, कल्याण और न्याय करना था। शासन के कार्य में मदद हेतु अनेक अधिकारी और कर्मचारी भी नियुक्त किए गए।

राजाओं की प्रकृति अपने राज्य को बढ़ाने में थी इसलिए उन्हें बड़ी-बड़ी सेनाएँ भी रखनी पड़ती थी। राजा सेना का प्रमुख होता था तथा वही युद्ध में सेना का संचालन करता था। राज्य की आय के लिए प्रजा से कर वसूला जाता था। व्यापार के द्वारा भी आय प्राप्त होती थी। इस समय वस्तुओं की खरीद एवं बिक्री रुपये-पैसे द्वारा होने लगी थी। बड़ी-बड़ी सड़कों से व्यापार में काफी वृद्धि होने लगी थी। ईरान, मध्य एशिया, और दक्षिण पूर्व-एशिया से व्यापारी भारत आते थे। शिल्पकार और व्यापारियों ने व्यापार के विकास के लिए समूह और संगठन भी बनाए।

फिर बने शहर

शहरों का जीवन

इस युग में पहले की अपेक्षा एक और बड़ा बदलाव देखने को मिलता है, वह था शहरों का विकास। इन शहरों का विकास प्रायः शिल्प केन्द्रों, व्यापारिक-केन्द्रों और राजधानियों के आस-पास हुआ। प्रारम्भ में कुछ गाँव ऐसे थे जिनमें शिल्प कार्य अधिक विकसित अवस्था में था। धीरे-धीरे ये कुशल शिल्पी एक स्थान पर एकत्र होने लगे और ये स्थान गाँव एवं शहर के रूप में बदलते गए। इन कुशल शिल्पियों ने एक स्थान पर रहकर काम करना इसलिए पसंद किया, क्योंकि इन्हें कच्चा माल प्राप्त करने और तैयार की हुई चीजों को बेचने में अधिक सुविधा होती थी। विभिन्न व्यवसायों को पुत्र अपने पिता से सीखता और व्यवसाय करता था। विभिन्न प्रकार के शिल्प कार्य करने वालों के अलग-अलग वर्ग बन गए। धीरे-धीरे इनका कार्य वंशानुगत हो गया और समाज में अधिक जटिलता एवं कठोरता व्याप्त हो गई।

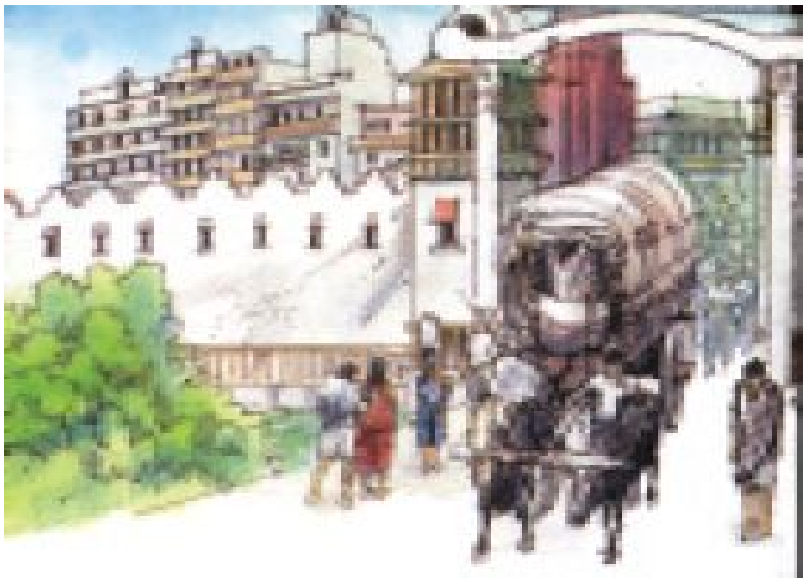

वह कौन सी विशेषताएँ हैं जो शहरों में होती किन्तु गाँवों नहीं होतीं। चर्चा कीजिए-

मगध

इन छोटे-छोटे राज्यों में एकता का अभाव था। एक राज्य दूसरे राज्य से अधिक शक्तिशाली बनना चाहता था। इस कारण इनमें आपस में संघर्ष होता रहता था। बड़े राज्य छोटे राज्यों को हड़पते चले गए। बिल्कुल वैसे ही जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। वे अपना राज्य क्षेत्र तथा प्रभाव बढ़ाने के लिए कई तरीके अपनाते थे। जैसे दूसरे राज्यों से मित्रता करना, शादी से रिश्ते बनाना, संधि करना या फिर सीधे आक्रमण करना। इस प्रकार एक राज्य दूसरे राज्यों में मिलते चले गए। अन्त में मगध सबसे शक्तिशाली साम्राज्य हो गया।

साम्राज्य- जब राजा अपने राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लेते हैं तो उनके राज्य को साम्राज्य कहा जाता है।

छठी शताब्दी ई0पू0 से नन्दों के साम्राज्य की स्थापना तक मगध में क्रमशः तीन राजवंशों का शासन हुआ - हर्यक वंश, शिशुनाग वंश एवं नन्द वंश। इनका शासनकाल लगभग 220 वर्षों तक रहा। घनानन्द नंदवंश का अन्तिम शासक था जिसके समय में सिकन्दर भारत आया। मगध साम्राज्य के शासकों ने अपने साम्राज्य के और अधिक विस्तार की नीति अपनायी। उनके पास एक विशाल सेना थी, जिसमें हजारों घुड़सवार और हाथी भी थे। यही कारण है कि मगध राज्य एक विशाल साम्राज्य बन सका।

सिकन्दर और पुरु युद्ध

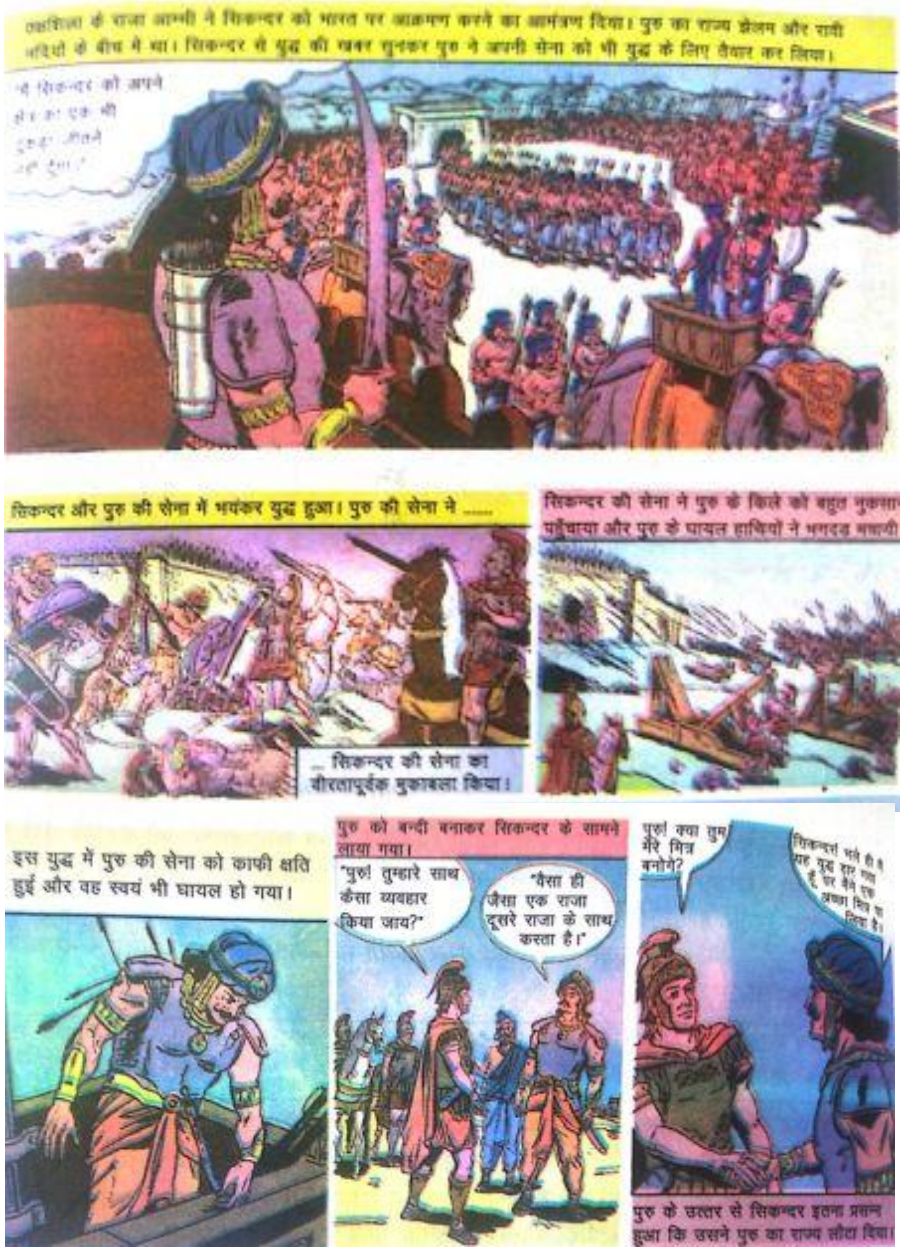

विरोधियों से भी क्या सीखा जा सकता है ? चर्चा करें-

का आक्रमण

उन दिनों यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में मेसिडोनिया नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा सिकन्दर अपनी विशाल सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला। वह पारसीक (हखमनी) साम्राज्य के सम्राट व अन्य बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को हराया। इनमें से एक राजा था पुरु जिसकी कहानी चित्रकथा के रूप में आपने पढ़ी।

अब सिकन्दर की सेना लड़ते-लड़ते थक चुकी थी। जब उसने मगध के राजा धननन्द की विशाल सेना के बारे में सुना तो उसने मगध की सेना से लड़ने से इंकार कर दिया और वे मेसिडोनिया लौट गए।

राजनैतिक क्षेत्र से ज्यादा सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र में पड़ा जैसे-

ीसिकन्दर ने भारत पर 326ई0पू0 में आक्रमण किया था। सिकन्दर के भारतीय आक्रमण के विवरण से भारतीय इतिहास की तिथि निर्धारण में सहायता मिलती है।

ीसिकन्दर के आक्रमण ने भारत के द्वार यूनानी सम्पर्क और प्रभावों के लिए खोल दिए।
ीइस घटना के बाद विदेशों से घनिष्ठ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए।
ीभारतीय शिल्पकला और ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र पर यूनानी लेखकों का गहरा प्रभाव पड़ा।
ीभारतीय सिक्कों पर यूनानी सिक्कों की निर्माण शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

हर्यक वंश
(544-492 ई0पू0)

शिशुनाग वंश
(492-344 ई0पू0)

नंद वंश
(344-323 ई0पू0)

अभ्यास

उत्तर लिखो-

1. महाजनपद कैसे बने ?

2. सोलह महाजनपदों में से प्रमुख चार महाजनपदों के नाम लिखिए।

3. राजतंत्र एवं गणतंत्र का अन्तर बताइए ?

4. अपने राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए राजाओं ने क्या प्रयास किया ?

5. सिकन्दर ने राजा पुरू के साथ कैसा व्यवहार किया ?

6. रिक्त स्थान भरिए-

अ. राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार करने वाले राज्य को ..... कहा जाता है।

ब. महाजनपद काल में राजा ..... का रक्षक था।

स. ..... के समय सिकन्दर भारत आया।

द. आम्भी ..... का राजा था।

गतिविधि

शिक्षक की सहायता से अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए कि निम्न महाजनपद वर्तमान के किस राज्य में स्थिति थे -

मगध काशी मत्स्य

अंग शूरसेन मल्ल

प्रोजेक्ट वर्क

*आप जिस स्थान में रहते हैं पता करें कि 16 महाजनपदों में से आपका क्षेत्र किससे सम्बन्धित था।

* वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल कितने जिले हैं, सूची बनाइए।